# बोलते शब्द
# Sound and Expressions

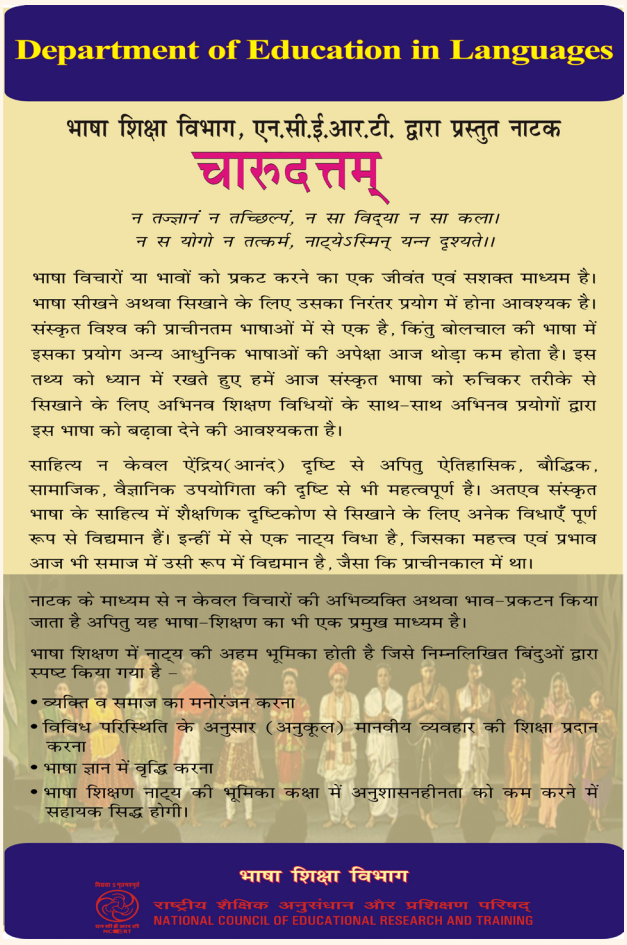


*आपरितोषाद्विदुषां न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञानम्।*
*बलवदपि शिक्षितानामात्मन्यप्रत्ययं चेतः ।।*

## रूपांतरण

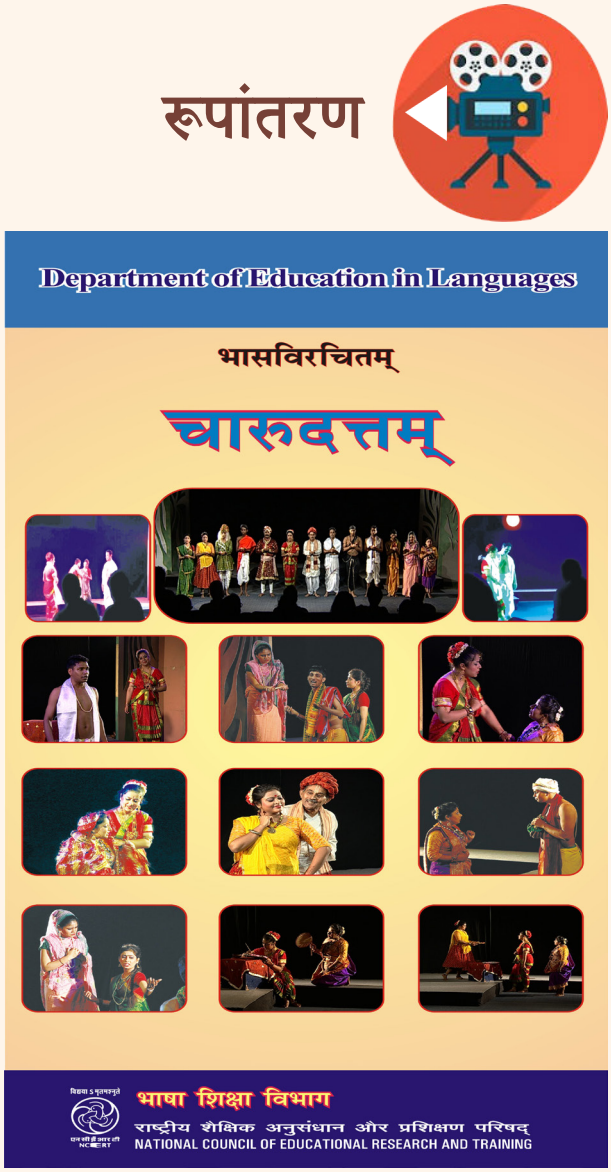


*अभिज्ञानशाकुन्तलम्*

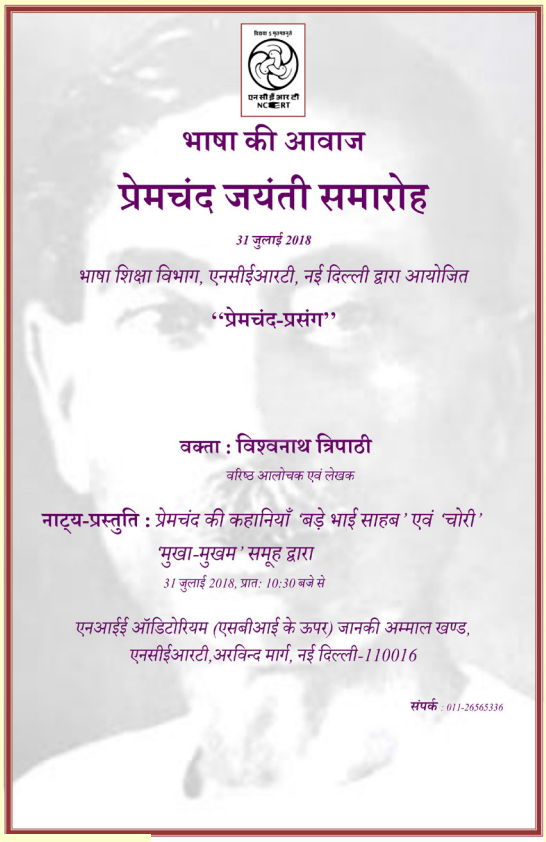
भाषा की आवाज
प्रेमचंद जयंती समारोह
31 जुलाई 2018
भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित
''प्रेमचंद-प्रसंग''
वक्ता : विश्वनाथ त्रिपाठी
वरिष्ठ आलोचक एवं लेखक
नाट्य-प्रस्तुति : प्रेमचंद की कहानियाँ 'बड़े भाई साहब' एवं 'चोरी'
'मुखा-मुखम' समूह द्वारा
31 जुलाई 2018, प्रातः 10:30 बजे से
एनआईई ऑडिटोरियम (एसबीआई के ऊपर) जानकी अम्माल खण्ड,
एनसीईआरटी,अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली-110016
संपर्क : 011-26565336

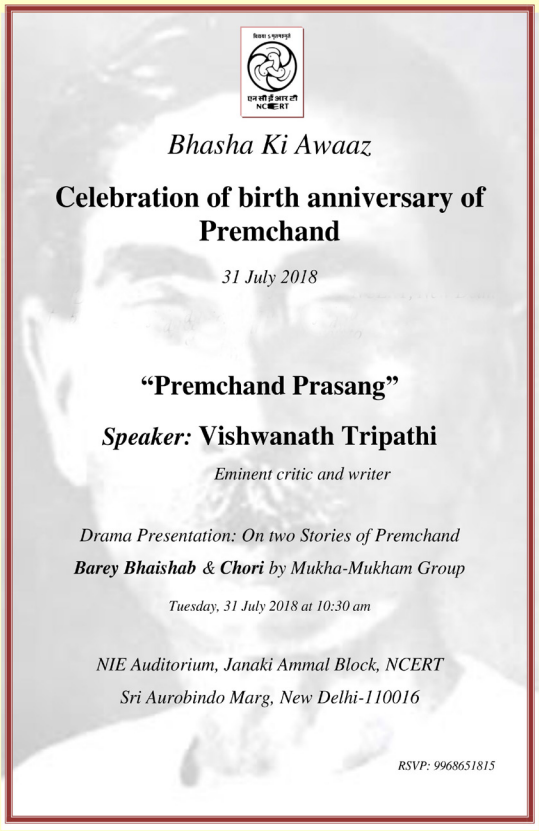
Bhasha Ki Awaaz
Celebration of birth anniversary of Premchand
31 July 2018
"Premchand Prasang"
Speaker: Vishwanath Tripathi
Eminent critic and writer
Drama Presentation: On two Stories of Premchand
Barey Bhaishab & Chori by Mukha-Mukham Group
Tuesday, 31 July 2018 at 10:30 am
NIE Auditorium, Janaki Ammal Block, NCERT
Sri Aurobindo Marg, New Delhi-110016
RSVP: 9968651815

*Realism in Premchand's writings unfolds into universal prespectives*

*Premchand's writings have layers of meaning.....*
*The writings are futuristic*

*There is no one who is like premchand in creativity and expresion*

## रूपांतरण

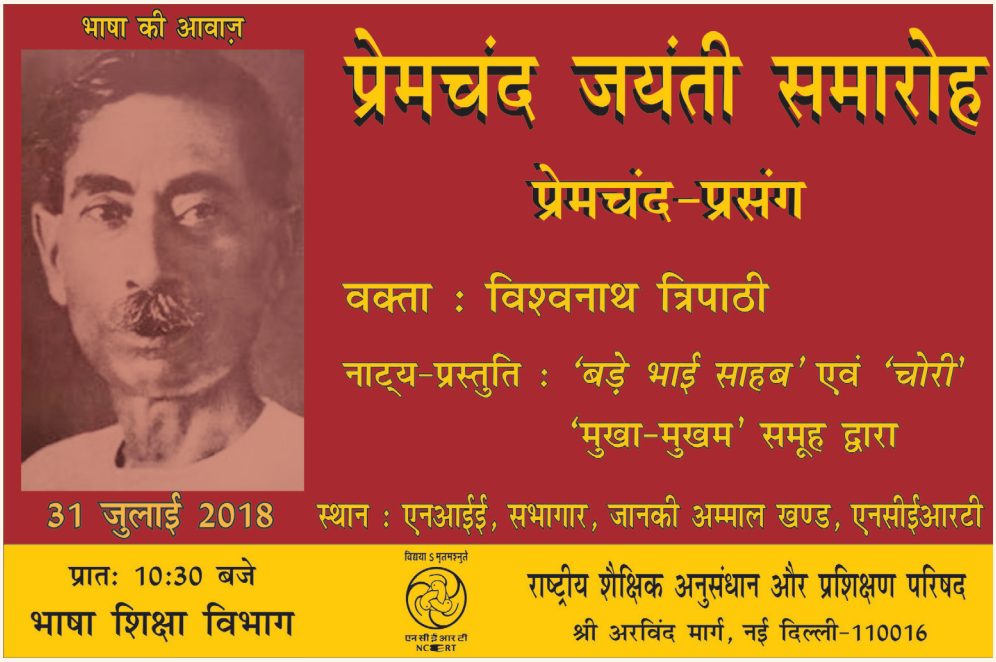


भाषा की आवाज़
प्रेमचंद जयंती समारोह
प्रेमचंद-प्रसंग
वक्ता : विश्वनाथ त्रिपाठी
नाट्य-प्रस्तुति : 'बड़े भाई साहब' एवं 'चोरी'
'मुखा-मुखम' समूह द्वारा
31 जुलाई 2018
स्थान : एनआईई, सभागार, जानकी अम्माल खण्ड, एनसीईआरटी
प्रात: 10:30 बजे
भाषा शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली-110016

# नमक

## रूपांतरण

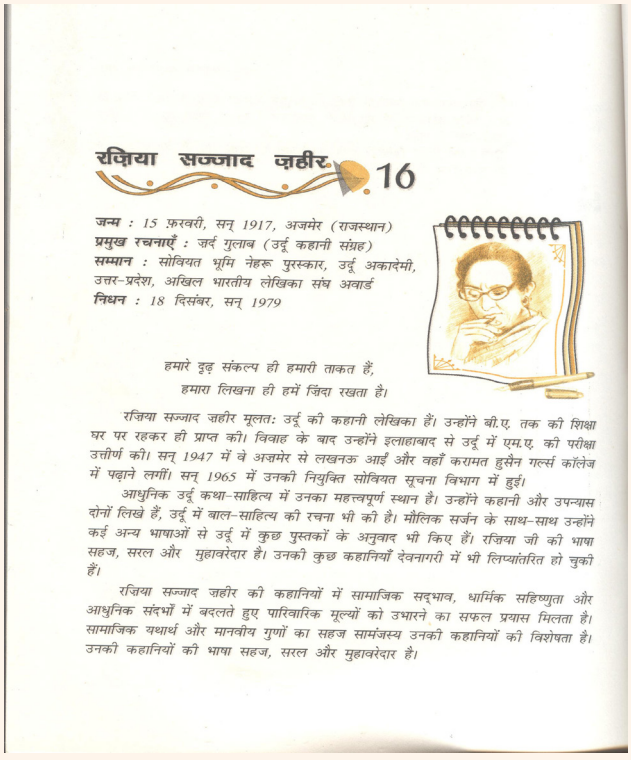

## रज़िया सज्जाद ज़हीर 16



**जन्म** : 15 फ़रवरी, सन् 1917, अजमेर (राजस्थान)
**प्रमुख रचनाएँ** : ज़र्द गुलाब (उर्दू कहानी संग्रह)
**सम्मान** : सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार, उर्दू अकादेमी, उत्तर-प्रदेश, अखिल भारतीय लेखिका संघ अवार्ड
**निधन** : 18 दिसंबर, सन् 1979

*हमारे दृढ़ संकल्प ही हमारी ताकत हैं,*
*हमारा लिखना ही हमें ज़िंदा रखता है।*

रज़िया सज्जाद ज़हीर मूलतः उर्दू की कहानी लेखिका हैं। उन्होंने बी.ए. तक की शिक्षा घर पर रहकर ही प्राप्त की। विवाह के बाद उन्होंने इलाहाबाद से उर्दू में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1947 में वे अज़मेर से लखनऊ आईं और वहाँ करामत हुसैन गर्ल्स कॉलेज में पढ़ाने लगीं। सन् 1965 में उनकी नियुक्ति सोवियत सूचना विभाग में हुई।

आधुनिक उर्दू कथा-साहित्य में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने कहानी और उपन्यास दोनों लिखे हैं, उर्दू में बाल-साहित्य की रचना भी की है। मौलिक सर्जन के साथ-साथ उन्होंने कई अन्य भाषाओं से उर्दू में कुछ पुस्तकों के अनुवाद भी किए हैं। रज़िया जी की भाषा सहज, सरल और मुहावरेदार है। उनकी कुछ कहानियाँ देवनागरी में भी लिप्यांतरित हो चुकी हैं।

रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानियों में सामाजिक सद्भाव, धार्मिक सहिष्णुता और आधुनिक संदर्भों में बदलते हुए पारिवारिक मूल्यों को उभारने का सफल प्रयास मिलता है। सामाजिक यथार्थ और मानवीय गुणों का सहज सामंजस्य उनकी कहानियों की विशेषता है। उनकी कहानियों की भाषा सहज, सरल और मुहावरेदार है।

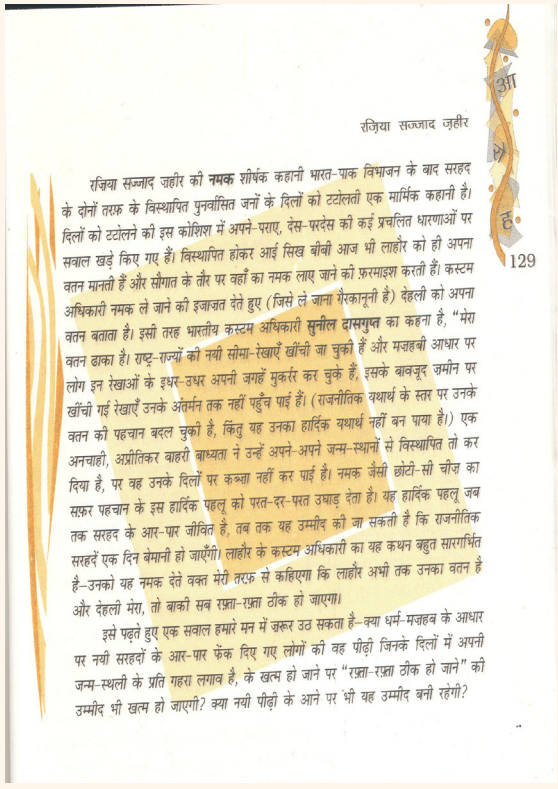





रज़िया सज्जाद ज़हीर की **नमक** शीर्षक कहानी भारत-पाक विभाजन के बाद सरहद के दोनों तरफ़ के विस्थापित पुनर्वासित जनों के दिलों को टटोलती एक मार्मिक कहानी है। दिलों को टटोलने की इस कोशिश में अपने-पराए, देस-परदेस की कई प्रचलित धारणाओं पर सवाल खड़े किए गए हैं। विस्थापित होकर आई सिख बीबी आज भी लाहौर को ही अपना वतन मानती हैं और सौगात के तौर पर वहाँ का नमक लाए जाने की फ़रमाइश करती हैं। कस्टम अधिकारी नमक ले जाने की इजाज़त देते हुए (जिसे ले जाना गैरकानूनी है) देहली को अपना वतन बताता है। इसी तरह भारतीय कस्टम अधिकारी **सुनील दासगुप्त** का कहना है, "मेरा वतन ढाका है। राष्ट्र-राज्यों की नयी सीमा-रेखाएँ खींची जा चुकी हैं और मज़हबी आधार पर लोग इन रेखाओं के इधर-उधर अपनी जगहें मुकर्रर कर चुके हैं, इसके बावजूद ज़मीन पर खींची गई रेखाएँ उनके अंतर्मन तक नहीं पहुँच पाई हैं। (राजनीतिक यथार्थ के स्तर पर उनके वतन की पहचान बदल चुकी है, किंतु यह उनका हार्दिक यथार्थ नहीं बन पाया है।) एक अनचाही, अप्रीतिकर बाहरी बाध्यता ने उन्हें अपने-अपने जन्म-स्थानों से विस्थापित तो कर दिया है, पर वह उनके दिलों पर कब्ज़ा नहीं कर पाई है। नमक जैसी छोटी-सी चीज़ का सफ़र पहचान के इस हार्दिक पहलू को परत-दर-परत उघाड़ देता है। यह हार्दिक पहलू जब तक सरहद के आर-पार जीवित है, तब तक यह उम्मीद की जा सकती है कि राजनीतिक सरहदें एक दिन बेमानी हो जाएँगी। लाहौर के कस्टम अधिकारी का यह कथन बहुत सारगर्भित है–उनको यह नमक देते वक्त मेरी तरफ़ से कहिएगा कि लाहौर अभी तक उनका वतन है और देहली मेरा, तो बाकी सब रफ़्ता-रफ़्ता ठीक हो जाएगा।

इसे पढ़ते हुए एक सवाल हमारे मन में ज़रूर उठ सकता है–क्या धर्म-मज़हब के आधार पर नयी सरहदों के आर-पार फेंक दिए गए लोगों की वह पीढ़ी जिनके दिलों में अपनी जन्म-स्थली के प्रति गहरा लगाव है, के खत्म हो जाने पर "रफ़्ता-रफ़्ता ठीक हो जाने" की उम्मीद भी खत्म हो जाएगी? क्या नयी पीढ़ी के आने पर भी यह उम्मीद बनी रहेगी?

*सारी शिक्षा शांति के लिए है।*

*मारिया मॉन्टेसरी*

गोदान मेरी दृष्टि: डॉ. प्रमोद कुमार दुबे, एसोसिएट प्रोफेसर, भाषा शिक्षा विभाग, एनसीईआरटी

यह कलाकृति दृश्य भाषा से संबंधित गोदान की समीक्षा है। इस कलाकृति में किसान होरी की बाँह पर उपन्यास के अनेक पात्र टिके हुए हैं। कलाकृति में प्रेमचंद की आखिरी तस्वीर, जब वे मरणासन्न  थे, का प्रयोग करके भारत के ग्रामीण समाज की ग़ासदी को दर्शाया गया है। यह ग़ासदी क्यों है? किसके शोषक पंजे से होरी की गर्दन दबी हुई है? डॉ. दुबे की कलाकृति यह सवाल दर्शकों के समक्ष रखती है।